BA Part – III

Sub- Pol. science.

Paper – VI (Political thought)

Dr. Dhananjay Singh.
Asst. Prof. Guest faculty/
part-time.
Deptt. of Pol. science.
L.S. College, Muzaffarpur

Topic :– "नैतिकता तथा धर्म के सम्बन्ध में मैकियावेली के विचार।"

⟹ नैतिकता तथा धर्म के बारे में मैकियावेली का दृष्टिकोण पुनर्जागरण के साथ-साथ इटली समाज की आन्तरिक एवं सर्वमुखी गिरावट से प्रभावित था। इटली के निवासी अराजक प्रवृत्तियों के शिकार हो गये थे। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति कानून अपने हाथ में ले लेता था।

⟹ मैकियावेली ने नैतिकता का न तो विरोध किया और न ही उसकी अवहेलना की। उसने यह कहा कि राजनीतिक सत्ता के उपकरण के रूप में अनैतिक कार्यों का भी उतना ही महत्व हो सकता है, जितना कि नैतिक का। इसी को दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मैकियावेली के अनुसार, यदि शासक को अपने राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हत्या, धोखेबाज़ी, वचन भंग अथवा क्रूरता इत्यादि साधनों का भी प्रयोग करना पड़े तो शासक को ऐसा करने से कदापि नहीं हिचकिचाना चाहिए। वह आगे कहता है कि एक शासक की सफलता का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं होता कि उसने नैतिकता तथा धार्मिकता का मार्ग अपनाया है और जिससे अपनी सत्ता को खो दिया। इससे उसकी असफलता सिद्ध होगी। किन्तु यदि शासक, हत्या, धोखेबाज़ी तथा अपने वचन भंग कर अर्थात् [illegible]ता को तोड़कर या इन अनैतिक साधनों

का सहारा लेकर भी अपने राज्य की रक्षा कर पाता है तो सभी लोग इस शासक की सराहना करेगा।

⟹ इस प्रकार जब कोई शासक अपने अनैतिक उपायों से या अनैतिक साधनों से राज्य की स्थापना करता है, उसका विस्तार करता है या उसकी रक्षा करता है तो मैकियावेली उस शासक के उपलब्धि की प्रशंसा तो करता है, परन्तु अनैतिक को सर्वदा/सदैव अनैतिक ही कहता है। उसका स्पष्ट तौर पर मानना है कि अनैतिक साधनों यथा - हिंसा, छल, छल-कपट, धोखाधड़ी, वचनभंगता इत्यादि के द्वारा सत्ता तो प्राप्त हो सकती है, परन्तु ख्याति नहीं। यह उल्लेखनीय है कि मैकियावेली ख्याति को महत्वपूर्ण मूल्य (Value) मानता है।

⟹ 'द प्रिन्स' (The Prince) में मैकियावेली ने जो कि इसका प्रसिद्ध ग्रन्थ है में अनैतिकता का समर्थन किया है और अपने ग्रन्थ डिस्कोर्स (Discourse) में नैतिकता का समर्थन किया है। साथ ही डिस्कोर्स (Discourse) में मैकियावेली ने सिद्धान्ततः गणतंत्रीय शासन प्रणाली (Republican System) को जनता के लिए सर्वोत्तम/अच्छा एवं स्थायी व्यवस्था माना है परन्तु इसकी सफलता के लिए सच्चे, सच्चरित्र और देशभक्त नागरिकों की आवश्यकता पर भी बल दिया है। परन्तु व्यवहार के धरातल पर या यों कहें कि व्यवहार के स्तर पर पूर्णसत्तावाद (Totalitarianism) ही सर्वोत्तम शासन व्यवस्था थी क्योंकि चूंकि मनुष्य अर्थात् तत्कालीन इटली वासी भ्रष्ट, अर्थलोलुप और स्वार्थी थे जिन्हें वश में करने के लिए निरंकुश और स्वेच्छाचारी शासक ही उपयुक्त होगा।

NOVEMBER 2017 | DECEMBER 2017

⟹ लेकिन यहाँ एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'द प्रिन्स' (The Prince) में मैकियावेली ने राजतंत्र (Monarchy) या अनैतिक साधनों की हिमायत नहीं की है। बल्कि इस कठोर सत्य को दर्शाया है कि पतन हो चुके समाज में अनैतिक / क्रूर साधनों का प्रयोग कर ही राजनीतिक पद को प्राप्त किया जा सकता है।

⟹ मैकियावेली एक वैज्ञानिक राजनीतिक दर्शन (Scientific Political Philosophy) का प्रतिपादन करता है तथा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्हीं साधनों या उपायों की हिमायत करता है जो सफल होंगे तथा अच्छाई-बुराई के द्वन्द्व में नहीं पड़ता है।

⟹ धर्म के प्रति भी मैकियावेली का दृष्टिकोण नैतिकता के सदृश/समान ही है। वह राजनीति को धर्म से पृथक करता है। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ (द प्रिन्स) की अपेक्षा डिस्कोर्सेज में उसने धर्म को राज्य की स्थिरता के लिए उपयोगी तत्व माना है साथ ही साथ उसने धर्म को राज्य की सुव्यवस्था के साधन के रूप में भी स्वीकार किया है।

⟹ अपने ग्रन्थ डिस्कोर्सेज में मैकियावेली धर्म की महत्ता को स्वीकारते हुए या बल देते हुए लिखता है कि जो राजा तथा गणराज्य अपने-आप को भ्रष्टाचार से मुक्त रखना चाहते हैं, उन्हें धार्मिक संस्कारों की शुद्धता को बनाये रखना चाहिए और उसके प्रति उचित श्रद्धाभाव रखना चाहिए। धर्म की हानि को देखने से बढ़कर किसी देश के विनाश का और कोई लक्षण हो ही नहीं सकता।

⟹ इस प्रकार हम देखते हैं कि मैकियावेली धर्म के महत्व को स्वीकार तो अवश्य करता है किन्तु जब धर्म राजनीतिक सत्ता (Political Authority) के मार्ग में बाधक हो, तब ऐसे धर्म

का परित्याग करने का वह समर्थन करता है। (सुझाव देता है). अतः स्पष्ट तौर पर हम कह सकते हैं कि मैकियावेली धर्म और राजनीति के बीच एक विभाजक रेखा खींचता है।

⟹ मैकियावेली के नैतिकता सम्बन्धी विचारों का गहन अवलोकन करने के उपरान्त हम स्पष्ट तौर पर कह सकते हैं कि वह नागरिकों के लिए एक प्रकार की / एक तरह की नैतिकता का तथा शासकों के लिए दूसरे प्रकार की / दूसरे तरह की नैतिकता का मापदण्ड निर्धारित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मैकियावेली नैतिकता के सम्बन्ध में दोहरा मापदण्ड निर्धारित करता है। अर्थात शासकों के लिए अलग नैतिकता तथा व्यक्तियों / नागरिकों के लिए अलग नैतिकता (Morality)।

⟹ मैकियावेली नैतिकता सम्बन्धी विचारों को प्रकट करते हुए कहता है कि शासकों को भक्ति-निष्ठ तथा नीति-निष्ठ होना चाहिए परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन्हें अनैतिक-कार्य करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। इसका आशय यह है कि वह शासकों के लिए नैतिकता को आवश्यक तत्व नहीं मानता। शासकों के लिए इसका मानदण्ड राजनीतिक सफलता है. भले ही वह साधन कितने अनैतिक क्यों न हो।

⟹ मैकियावेली की मान्यता है कि शासक नैतिकता से ऊपर होता है। वह नैतिकता के नियमों से बंधा नहीं होता। उसका कहना है कि शासक के लिए विश्वास को निभाना बहुत ही प्रशंसनीय है किन्तु राज्य की सत्ता को बनाये रखने के लिए विश्वासघात और छल-कपट अत्यन्त आवश्यक तत्व है.

⟹ मैकियावेली अपने नैतिकता सम्बन्धी विचारों को आगे बढ़ाते हुए कहता है कि प्रजा / नागरिक को नैतिक एवं धार्मिक आचरण से युक्त / सदाचारी होना चाहिए क्योंकि

NOVEMBER 2017					
Sun		5	12	19	26
Mon		6	13	20	27
Tue		7	14	21	28
Wed	1	8	15	22	29
Thu	2	9	16	23	30
Fri	3	10	17	24	
Sat	4	11	18	25	

DECEMBER 2017					
Sun	31	3	10	17	24
Mon		4	11	18	25
Tue		5	12	19	26
Wed		6	13	20	27
Thu		7	14	21	28
Fri	1	8	15	22	29
Sat	2	9	16	23	30

जब जनता में नैतिकता और धार्मिकता के गुणों का विद्यमान पाया जाता है या यों कहें कि जब जनता में नैतिकता और धार्मिकता के गुण विद्यमान होते हैं, तब शासक आसानी से उनमें अनुशासन बनाये रखता है तथा उनकी निष्ठा प्राप्त करता है।

⟹ इस प्रकार मैकियावेली के नैतिकता सम्बन्धी विचारों का सांगोपांग अध्ययनोपरान्त हम पाते हैं कि उसने नीति को राजनीति से अलग नहीं किया है बल्कि राजनीतिक नैतिकता को सामाजिक जीवन की नैतिकता से पृथक/अलग कर दिया है.

⟹ मैकियावेली चर्च का विरोधी है न कि धर्म का। धर्म और नैतिकता को वह जीवन के लिए महत्वपूर्ण समझता है, परन्तु एक राजवैज्ञानिक होने के नाते वह नैतिकता एवं धर्म को उपकरण/यंत्र (Tools/Instrument) के रूप में देखता है.

⟹ मैकियावेली ने धर्म और नैतिकता का राजनीति से जो संबंध जोड़ा/स्थापित है उससे उसका यथार्थवाद प्रतिबिम्बित/प्रकट होता है. या यों कहें कि उसमें यथार्थवाद की झलक दिखाई पड़ती है.

—x—